* इस युग में वीणा का प्रयोग होने लगा था।
* चारों वेदों तथा उनके विविध अंगों का विस्तार इसी युग में हुआ।
* सर्वप्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद है
* गीत के लिए गीर, गातु, गाथा, गायन, गीति तथा साम शब्दों का प्रयोग होता था।
* ऋग्वेद की रचनाएं स्तोत्र कहलाती थी।
* गीत प्रबन्धों को गाथा कहा जाता था।
* (साम) गाथा गाने वाले गायक - गाथिन कहलाते थे।
* अन्त्येष्टि के समय पर साम का गायन होता था

* ऋग्वेद काल में तीनों प्रकार के वाद्यों (अवनद्ध, सुषिर और तन्तु) का विकास मिलता है जिसे नारदी कहा जाता था।
* अवनद्ध वाद्य – दुन्दुभि, आडंबर, भूमि दुन्दुभि,
  तन्त्र वाद्य – कांड, वीणा, कर्करी वीणा, वाणवीणा
  सुषिर वाद्य – तूणव, नाडि और बाकुर आदि
* मंगल वाद्य के रूप में वीणादि आदि वाद्यों का वादन होता था।
* यजुर्वेद उन मंत्रों का संकलन है जिनका गायन यज्ञादि के अवसर पर कर्मकाण्ड के लिए होता था।
* चतुर्वर्ण ... रूप का रूप (शैली) का